



चरकसंहिता में प्रयुक्त धात्वार्थों का विवेचन

Dr. Seema Devi, Department of Sanskrit, Govt. Gollege Bahadurgarh

चरकसंहिता (च. सं.) आयुर्वेद का प्रसिद्ध एवं प्राचीनतम ग्रंथ है। इस संहिता का मूल नाम अग्निवेशतन्त्र था, जिसका निर्माण अग्निवेश ने किया, सबसे पूर्व इन्होंने ही आत्रेय के उपदेश का सूत्ररूप में संकलन किया¹, सूत्ररूप अग्निवेशतन्त्र पर ही चरक ने संग्रह तथा भाष्य लिखा, जिसने च. सं. के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त की। कालान्तर में दृढबल ने इसका पुनः प्रतिसंस्कार किया। इन तीनों स्थितियों का संकेत सूत्र-भाष्य-संग्रह क्रम द्वारा किया गया है²। दृढबल ने इस संहिता के प्रतिसंस्कार में अनेक नवीन तथ्यों का समाकलन कर इसे आयुर्वेदीय जगत् में चिकित्सा की सर्वोच्च संहिता-ग्रन्थ के रूप में स्थान दिलाया। अतएव अत्रोच्यते – 'यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्'³।

ISSN : 2348-5612 © URR



प्रस्तुत शोध-पत्र में (च.सं.) में प्रयुक्त धात्वार्थों का विवेचन किया गया है। आचार्य पतंजलि के अनुसार – 'अर्थ गत्यर्थः शब्दप्रयोगः' अर्थात् भाषा की उत्पत्ति अर्थ की सूक्ष्म अभिव्यक्ति के लिए हुई है। अर्थ भाषा की आत्मा है। अर्थ चिन्तन का प्रारम्भ ऋग्वेद से हो जाता है। तदनन्तर निरुक्त शब्दार्थ के क्रमबद्ध चिन्तन का प्राचीनतम ग्रन्थ है। अर्थ के अभाव में भाषा का कोई महत्त्व नहीं होता है। ऋग्वेद के सूक्त 10.71 के अनुसार जो व्यक्ति अर्थज्ञान से रहित है, वह वाणी को देखता हुआ भी नहीं देखता है, सुनता हुआ भी नहीं सुनता है, किन्तु जो अर्थग्राही है उसके प्रति वाणी अपने रहस्यों को इस प्रकार खोल देती है जैसे एक शोभवसना पत्नी पति के समक्ष स्वयं को विवृत कर देती है।⁴ अर्थज्ञान बिना सम्पूर्ण वाङ्मय भारभूत होता है। अर्थज्ञान से युक्त ही सभी कल्याणों का भोग करता है।⁵ प्रत्येक धातु (शब्द) का अर्थ होता है, लेकिन वह हमेशा एक नहीं रहता, जिस प्रकार भाषा के बाह्यरूप का परिवर्तन होता रहता है, उसी प्रकार समयानुसार उसके अर्थों में भी परिवर्तन होता रहता है—

- (1) √अर्ह 476 पूजायाम्, भ्वादि. परस्मै. सेट्। अर्हति⁶, अर्हन्⁷ – यहाँ प्रयुक्त धातु का अर्थ पाणिनीय धात्वर्थ – 'पूजा करना, सत्कार करना, पूजनीय होना' – को व्यवहृत न करता हुआ, च.सं. के प्रसंगानुसार – 'योग्य होना' – अर्थ को सूचित कर रहा है।
- (2) √खाद् 41 भक्षण्, भ्वादि. परस्मै. सेट्। खादति⁸ – यहाँ धातु का अर्थ- 'खाना' – न होकर च.सं. के अनेक स्थलों में विषयानुसार- 'काटना' – मिला है।
- (3) √ग्रह 65 उपादाने, क्रयादि. उभ. सेट्। गृह्णाति⁹ – प्रस्तुत प्रयोग में √ग्रह धातु का अर्थ पाणिनीय अर्थानुसार- 'लेना, स्वीकार करना' – न होकर- 'धारण करना' – मिला है।
- (4) √घट्ट 163 चलने, भ्वादि. आत्मने. सेट्। घट्टयेत्¹⁰ – यहाँ धातु का अर्थ- 'जाना' – न प्रयुक्त होकर- 'दबाना' – हुआ है।



- (5) √तन्त्र 125 कुटुम्बधारणे, चुरादि. आत्मने. सेट्। तन्त्रयते¹¹—पाणिनीय धातुपाठ में प्रयुक्त √तन्त्र धातु—‘फैलाना, कुटुम्ब पोषण करना, प्रधान होना’—अर्थों की बोधक है, किन्तु च. सं. के अनेक स्थलों में प्रयुक्त धातु—‘युक्त करना, धारण करना—अर्थों को द्योतित करती है।
- (6) √दिह 6 उपचये, अदादि. उभय. अनिट्। दिग्धम्¹²—√दिह धातु का अर्थ—‘बढना, जमाना, लीपना, पोतना’—व्यवहृत हुआ है, किन्तु यहाँ इन अर्थों में प्रयोग न होकर – ‘मलना’—अर्थ में प्रयोग हुआ है।
- (7) √दृश् 70 प्रेक्षणे, भ्वादि. परस्मै. अनिट्। पश्यति¹³—सामान्यतया √दृश् धातु का अर्थ पाणिनि धातुपाठ के अर्थानुसार—‘देखना’—मिलता है, किन्तु यहाँ प्रसंगानुसार धात्वर्थ— ‘समझना’—मिला है।
- (8) √भज् 716 सेवयाम्, भ्वादि. उभय. अनिट्। भजते¹⁴—यहाँ धातु प्रसंगानुसार—‘उत्पन्न करना, प्राप्त करना, निवास करना’—अर्थों को द्योतित करती हुई पाणिनि—सम्मत धात्वर्थ—‘भजना, भजन करना, उपयोग करना, विषय वासना का अनुभव करना’—से भिन्नार्थक है।
- (9) √भा 54 दीप्तौ, अदादि. परस्मै. सेट्। भाति¹⁵—च.सं. के प्रस्तुत प्रयोग में धात्वर्थ— ‘निकलना’—हुआ है जो पाणिनीय धात्वर्थ—‘चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर दिखना’— आदि से भिन्न है।
- (10) √मूर्च्छ् 130 मोहसमुच्छ्राययोः, भ्वादि. परस्मै. सेट्। मूर्च्छयति¹⁶—√मूर्च्छ् धातु को पाणिनि ने—‘मुरझाना, मूर्च्छित होना, बढना’—अर्थों में स्वीकृत किया है, परन्तु च.सं. में यह धातु—‘प्रकट होना’—अर्थ में मिली है।
- (11) √मृग् 283 अन्वेषणे, चुरादि. आत्मने. सेट्। मृगयते¹⁷—यहाँ धातु—‘मृगया करना, शिकार करना, ढूँढना’ आदि पाणिनीय धात्वर्थों को सूचित न करती हुई—‘इच्छा करना’—अर्थ का द्योतित कर रही है।
- (12) √रुह् 589 बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च, भ्वादि. परस्मै. अनिट्। रोहन्ति¹⁸—पाणिनि धातुपाठ के अनुसार √रुह् धातु—‘बीज से उत्पन्न होना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म लेना’—अर्थों को व्यक्त करती है, किन्तु च. सं. में विषयानुसार इन अर्थों का प्रयोग न होकर—‘भरना’—मिला है।
- (13) √ली 30 श्लेषणे, दिवादि. आत्मने. अनिट्। लीयते¹⁹—प्रस्तुत प्रयोग में √ली धातु—‘युक्त होना, प्राप्त होना, मिलना’—अर्थों को सूचित न करती हुई—‘मोहित होना’—अर्थ प्रकट करती है।
- (14) √वश् 88 कान्तौ, अदादि. परस्मै. सेट्। उशन्ति²⁰—यहाँ पाणिनीय धात्वर्थ—‘इच्छा करना, चाहना’—प्रयुक्त न होकर—‘कहना’—मिला है।
- (15) √वस् 725 निवासे, भ्वादि. परस्मै. अनिट्। उष्यते²¹—पाणिनि के अनुसार √वस् धातु ‘टिकना, निवास करना’—अर्थों की बोधक है, किन्तु च. सं. के प्रसंग में धातु—‘दाह करना’—अर्थ का व्यक्त करती है।
- (16) √विद् 140 लाभे, तुदादि. उभय. अनिट्। विन्दन्ति²²—धातुपाठ में √ विद् धातु का अर्थ—‘प्राप्त करना, सम्पादित करना’—है, किन्तु यहाँ अर्थ—‘धारण करना’—है।
- (17) √सस्ज् 121 गतौ, भ्वादि. परस्मै. सेट्। सज्जति²³—पाणिनि धातुपाठ के अर्थानुसार √सस्ज् धातु गति अर्थ को व्यवहृत करती है, परन्तु च.सं. के अनेक स्थलों में इसके विपरीत अर्थ अर्थात् अगति अर्थ की बोधक है।
- (18) √स्पृश् 129 संस्पर्शने, तुदादि. परस्मै. अनिट्। स्पृशन्ति²⁴—पाणिनि व्याकरण के अनुसार √स्पृश् धातु का अर्थ—‘स्पर्श करना, छूना, संयोग करना’—न करके—‘उत्पन्न होना’—अनेक स्थलों पर किया है। अतः ये अर्थ—व्यत्यय के प्रयोग माने जा सकते हैं।



(19) √हृष् 127 तुष्टौ, दिवादि. परस्मै. सेट्। हृष्यन्ते²⁵—√हृष् धातु को पाणिनि ने –‘हृष्ट होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना’—अर्थों में स्वीकार किया है, किन्तु च. सं. में धातु का अर्थ—‘खट्टे होना’—किया है। उपसंहार—किसी भी ग्रन्थ के भाषिक विवेचन में धात्वर्थों का विशेष महत्त्व होता है। √अर्ह, √खाद्, √ग्रह, √घट्ट, √तन्त्र, √दिह, √दृश, √मुच्छ, √भज, √भा, √मृग, √रुह, √ली, √वश, √वस् आदि धात्वर्थों की दृष्टि से च.सं. में अनेक ऐसे प्रयोग मिलते हैं, जो पाणिनीय व्याकरण सम्मत नहीं हैं। जिसका कारण ग्रन्थ की प्राचीनता तथा समयानुसार धात्वर्थों में परिवर्तन एवं परिवर्धन है।

- 1 च.सं. , 1.1.4
- 2 वही, 3.8.3
- 3 वही, 1.29.7
- 4 वही, 8.12.53
- 5 ऋग्वेद, 10.71.4
- 6 च.सं. , 6.19.47
- 7 वही, 1.9.23
- 8 (क) वही, 5.8.19 (ख) वही, 5.8.19 (ग) वही, 8.6.72
- 9 वही, 6.30.38.
- 10 (क) वही, 6.23.102 (ख) वही, 8.7.30
- 11 (क) वही, 4.1.77 (ख) वही, 6.28.5 (ग) वही, 8.11.17
- 12 वही, 6.24.184
- 13 वही, 5.4.27
- 14 (क) वही, 1.5.76 (ख) वही, 1.17.100
- 15 वही, 5.2.8
- 16 वही, 8.7.15
- 17 वही, 5.11.9
- 18 (क) वही, 5.5.14 (ख) वही, 6.25.68
- 19 वही, 6.3.324
- 20 (क) वही, 1.3.20 (ख) वही, 6 .6.10
- 21 वही, 6.12.13
- 22 वही, 6.30.125
- 23 (क) वही, 6.4.19, (ख) वही, 6.15.37
- 24 (क) वही, 2.5.11, (ख) वही, 2.6.4 (ग) वही, 6.13.49
- 25 वही, 1.5.80